संकलित परीक्षा - I (2015)

कक्षा - IX **हिन्दी 'अ' निर्धारित समय : 3 घण्टे** **अधिकतम अंक : 90**

निर्देश :

(1) इस प्रश्न-पत्र के **चार खंड** हैं - **क, ख, ग** और **घ।**

(2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है।

(3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खण्ड-क
(अपठित बोध)

प्र०१- प्रस्तुत गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए।

बहुधा हम तप को निर्धनता या आत्म त्याग की मूल कहते हैं। तप यह दोनों ही नहीं है। तप परिपक्वता से आता है। यह सामाजिक आरोग्यता का प्रतीक है। प्राय: जो व्यक्ति तप का अभ्यास करते हैं वे सम्पन्नता से चिढ़ते हैं। यह बहुत दयनीय स्थिति है, इस प्रकार का तप परिपक्वता से नहीं बल्कि मजबूरी द्वारा आता है। वास्तविक तप तो सम्पन्नता के प्रति सहनशील है और इसमें कोई आक्रोश नहीं। वास्तव में परिपक्व व्यक्ति को उनके प्रति दया होगी जो तप नहीं करते। अभिमान है आत्मा की निर्धनता। तप इस झूठे अभिमान से मुक्ति दिलाता है परंतु तप का घमण्ड फिर एक अभिमान है। तप उत्सव के विरुद्ध नहीं और केवल आडम्बर उत्सव नहीं। उत्सव तो केवल आत्मा में उदित होता है। केवल वही जिसमें आत्मिक सम्पन्नता है, तप कर सकता है। किसी के पास सांसारिक सम्पन्नता हो सकती है परन्तु यदि उसमें आत्मिक निर्धनता है, वह न तो उत्सव मना सकता है न ही विकसित हो सकता है।

(क) तप किससे आता है ?

(i) परिपक्वता से। (ii) परिश्रम से।

(iii) घमंड से। (iv) पूजा-पाठ से।

(ख) तप किसका प्रतीक है ?

(i) सामाजिक आरोग्यता का। (ii) आर्थिक उन्नति का।

(iii) सामाजिक समरसता का। (iv) व्रत और उपवास का।

(ग) तप का अभ्यास करने वालों को संपन्नता से चिढ़ना है -

(i) दयनीय स्थिति। (ii) बेहतर स्थिति।

(iii) श्रेष्ठ स्थिति। (iv) विचारणीय स्थिति।

(घ) अभिमान का दूसरा नाम है-

(i) जीवन की निर्धनता। (ii) आत्मा की निर्धनता।

(iii) जीवन मूल्यों की निर्धनता। (iv) आत्मा का भरण।

(ङ) उत्सव मनाने वाले व्यक्ति में होती है-

(i) आत्मिक सम्पन्नता । (ii) आर्थिक सम्पन्नता।

(iii) सामाजिक सम्पन्नता। (iv) आर्थिक विवशता।

प्र०२- निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर, दिए गए प्रश्नों के उत्तर के विकल्प छाँटकर लिखिए —

आज विश्व का मानव जिन तमाम समस्याओं से घिरा और आक्रान्त है उसमें एक ज्वलंत समस्या 'विश्वशान्ति और अहिंसा' की है। हम इतिहास में पढ़ते हैं कि जब मनुष्य आदिम अवस्था में था उस समय वह पशुवत जीवन व्यतीत करता था। उस समय वह जंगली हिंसक पशुओं से भयभीत रहता था। इससे छुटकारा पाने के लिए उसने दल बनाया और हथियारों का निर्माण किया। प्रत्येक दल का एक दलपति होता था। अब एक दल के लोग दूसरे दल से भयभीत रहने लगे। इस प्रकार क्रमशः ग्राम, शहर, प्रान्त, देश और महादेश बनते गए और आज का मानव पूरे विश्व से जुड़ा हुआ है। आज वह बहुत सभ्यऔर उन्नतशील हो गया है। अब चन्द्रतल, अन्तरिक्ष, भूगर्भ और समुद्र की सतह उसके अधिकार क्षेत्र में है। परन्तु इतनी ऊँचाई पर पहुँचा हुआ मानव अपनी ज्वलंत समस्या विश्व शान्ति और अहिंसा का कोई हल नहीं निकाल पाया। विश्व-शान्ति के लिए राष्ट्र संघ और तत्संबंधी कानून बनाए गए हैं परन्तु आज का मानव, मानव से ही इतना अधिक भयभीत है जिसका अल्पांश ही वह आदिम अवस्था में जंगली हिंसक जानवरों से भयभीत रहा होगा।

(1) विश्व के सामने कौन-सी बड़ी समस्या है ?

(क) परस्पर प्रेम की (ख) हिंसा की

(ग) आतंक की (घ) विश्वशांति और अहिंसा की

(2) आदिम युग में मनुष्य कैसा जीवन व्यतीत करता था ?

(क) मानव रूप में (ख) पशुवत

(ग) मित्रवत (घ) सामान्य

(3) जंगली शब्द में प्रयुक्त मूल शब्द और प्रत्यय हैं :

(क) जंग + ली (ख) जंगल + इ

(ग) जंगल + ई (घ) जम् + गली

(4) आज का मानव किससे भयभीत है ?

(क) मानव से (ख) पशु से

(ग) आतंक से (घ) स्वयं से

(5) ''विश्व-शान्ति'' में समास है —

(क) तत्पुरुष (ख) द्वंद्व

(ग) द्विगु (घ) बहुब्रीहि

प्र०३- निम्नलिखितकाव्यांश को पढ़कर, दिये गये प्रश्नों के उत्तरों में से सही विकल्प छाँटकर लिखिए।

कोटि-कोटि नंगों भिखमंगों के जो साथ,
खड़े हुए हैं कंधा जोड़े, उन्नत माथ,
शोषित जन के, पीड़ित जन के कर को थाम,
बढ़े जा रहे उधर जिधर हैं मुक्ति प्रकाम।
ज्ञात और अज्ञात मात्र ही जिनके नाम।
वंदनीय उन सत्पुरुषों को सतत प्रणाम।
जिनके गीतों के पढ़ने से मिलती शांति,
जिनकी तानों के सुनने से झिलती भ्रांति,

छा जाती मुखमंडल पर यौवन की कांति।
जिनकी टेकों पर टिकने से टिकती क्रांति।
मरण मधुर बन जाता है जैसे वरदान,
अधरों पर खिल जाती है, मादक मुस्कान।

(i) कोटि-कोटि का अर्थ है :

(क) हजारों-हजारों । (ख) लाखों ।

(ग) अरबों । (घ) करोड़ों-करोड़ों ।

(ii) पीड़ित जन के हाथों को थाम कर ऊँचा सिर किए बढ़े जा रहे लोग कहाँ जा रहे हैं ?

(क) क्रांति करने ।

(ख) दीनों को कष्ट देने ।

(ग) दीन लोगों के कष्ट दूर करने।

(घ) शोषित-पीड़ितों को कष्टों से मुक्ति दिलाने ।

(iii) दीनों के हितैषियों को काव्यांश में बताया गया है :

(क) सत्पुरुष और वंदनीय। (ख) उपेक्षित और निठल्ले।

(ग) आलसी व निंदनीय । (घ) भ्रमित और व्यथी।

(iv) काव्यांश में किनकी वंदना और प्रशंसा वर्णित है ?

(क) दीन-हीनों की ।

(ख) मतवाले लोगों की।

(ग) आज़ादी दिलाने वालों की ।

(घ) दीनों एवं शोषितों के हित लोकसेवकों की।

(v) दीनों के हितैषी लोगां का मरण भी किस रूप में बदल जाता है ?

(क) अभिशाप के रूप में (ख) दुष्कर्म-बनकर

(ग) सुकर्म के रूप में (घ) वरदान के रूप में

प्र०४- निम्नलिखितकाव्यांशकोपढ़कर, दियेगएप्रश्नोंकेउत्तरोंमेंसेसहीविकल्पछाँटकर लिखिए।

ज़िन्दगी वहीं तक नहीं, ध्वजा जिस जगह विगत युग ने गाड़ी,
मालूम किसी को नहीं, अनागत नर की दुविधाएँ सारी,
सारा जीवन नप चुका, कहे जो, वह दासता-प्रचारक है,
नर के विवेक का शत्रु, मनुज की मेधा का संहारक है।

जो कहे, सोच मत स्वयं, बात जो कहूँ, मानता चल उसको,
नर की स्वतंत्र चिंतन मणि का तू कह अराति प्रबल उसको।
नर के स्वतंत्र चिन्तन से जो डरता, कदर्य, अविचारी है,
बेड़ियाँ बुद्धि को जा देता, जुल्मी है, अत्याचारी है।

लक्ष्मण-रेखा के दास तटों तक ही जाकर फिर जाते हैं,
वर्जित समुद्र में नाव लिए स्वाधीन वीर ही जाते हैं,
आज़ादी है अधिकार खोज की नई राह पर आने का,

आज़ादी है अधिकार नए द्वीपों का पता लगाने का।

(1) आज़ादी किसका अधिकार है ?

(क) जीवन के नए मार्ग खोजने वालों का

(ख) लक्ष्मण – रेखा के दास लोगों का

(ग) स्वतंत्रता न चाहने वालों का

(घ) गुलामी का जीवन जी रहे लोगों का

(2) किसी को क्या नहीं मालूम है ?

(क) नर की दुविधाएँ (ख) नर की सुविधाएँ (ग) जीवन का उद्देश्य (घ) नई खोज

(3) ज़िन्दगी कहाँ तक सीमित नहीं है ?

(क) सौ सालों तक

(ख) जहाँ विगत युग की ध्वजा गाड़ दी गई

(ग) पुरानी बातों तक

(घ) काली रातों तक

(4) क्या करने को कहा जा रहा है ?

(क) बात न मानना। (ख) बिना सोच–विचार किए बात मानना।

(ग) बात करना। (घ) बात कहना।

(5) वर्जित समुद्र में कौन नाव लिए जाता है ?

(क) नाविक। (ख) मछुआरा।

(ग) स्वाधीन वीर। (घ) सैलानी।

खण्ड–ख

(व्यावहारिक व्याकरण)

प्र०५- निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

(क) 'निर्मम' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग और मूल शब्द लिखिए।

(ख) 'कु' उपसर्ग लगाकर दो शब्द बनाइए।

(ग) 'चुनौती' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय और मूल शब्द लिखिए।

(घ) 'या' प्रत्यय से दो शब्द बनाइए।

(ङ) **निम्नलिखितसमस्तपदोंकाविग्रहकर समासकानामलिखिए।**

(I) षड़ानन (II) अमीर–गरीब (III) नवरत्न

प्र०६- (I) अर्थ के आधार पर निम्नलिखितवाक्योंको पहचान कर उनके भेद लिखिए।

(क) यदि तुम कहते तो मैं जरूर चलता।

(ख) अरे ! वह पास हो गया।

(II) निम्नलिखितवाक्योंको निर्देशानुसार बदलिए।

(क) वह रो रहा है। (प्रश्नवाचक)

(ख) कल तुम मेरे घर आना। (निषेधवाचक)

प्र०७- निम्नलिखितपद्यांशों में प्रयुक्त अलंकारों की पहचान कर उनके नाम लिखिए :

(क) असंख्यकीर्तिरश्मियाँविकीर्णदिव्यदाह-सी।

(ख) मनु दृग फारि अनेक जमुन विरखत ब्रज शोभा ।

(ग) दिवसावसान का समय।
मेघमय आसमान से उतर रही
संध्या सुंदर परी-सी धीरे-धीरे।

(घ) पायो जी मैंने राम-रतन-धन पायो।

खण्ड-ग

(पाठ्य-पुस्तक)

प्र०८- निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।(2+2+1)

हमारी नई संस्कृति अनुकरण की संस्कृति है। हम आधुनिकता के झूठे प्रतिमान अपनाते जा रहे हैं। प्रतिष्ठा की अंधी प्रतिस्पर्धा में जो अपना है उसे खोकर छद्म आधुनिकता की गिरफ्त में आते जा रहे हैं। संस्कृति की नियंत्रक शक्तियों के क्षीण हो जाने के कारण हम दिग्भ्रमित हो रहे हैं। हमारा समाज ही अन्य निर्देशित होता जा रहा है। विज्ञापन और प्रसार के सूक्ष्म तंत्र हमारी मानसिकता बदल रहे हैं।

(i) 'अनुकरण' शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए नई संस्कृति की दो विशेषताएँ बताइए ।

(ii) 'छद्म आधुनिकता' किसे कहते हैं ? उसका समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहा है ?

(iii) विज्ञापन और प्रसार के तंत्र में न फँसकर हम क्या करें ?

प्र०९-निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए-

(i) ''स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है।'' कैसे ?'उपभोक्तावाद की संस्कृति' के आधार पर लिखिए।

(ii)'सालिम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने के बजाए अथाह सागर बनकर उभरे थे।' पाठ के आधार पर कथन को स्पष्ट कीजिए।

(iii)छोटी बच्ची को हीरा और मोती से हमदर्दी क्यों हो गई ?

(iv)उस समय के तिब्बत में हथियार का कानून न रहने के कारण यात्रियों को किस प्रकार का भय बना रहता था ?'ल्हासा की ओर' के आधार पर उत्तर दीजिए।

(v)पश्चिमी देशों में भारतवासियों की दुर्दशा का क्या कारण है ?''दो बैलों की कथा'' पाठ के आधार पर बताइए।

प्र०10- प्रस्तुत पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए। (2+2+1)

रस्सी कच्चे धागे की, खींच रही मैं नाव।
जाने कब सुन मेरी पुकार करें देव भवसागर पार।
पानी टपके कच्चे सकोरे, व्यर्थ प्रयास हो रहे मेरे।
जी में उठती रह-रह हूक, घर जाने की चाह है घेरे।

(क) कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किए जाने वाले प्रयास असफल क्यों हो रहे हैं ?

(ख) कवयित्री अपनी पुकार किसे सुनाना चाहती है ?

(ग) कवयित्री किस घर में जाना चाहती है ?

प्र०11-निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए-

(i)साहब को पहचानने का सच्चा साधन क्या है? कवयित्री ललद्पद किसे साहब मानती हैं आर व्यक्ति को क्या निर्देश देती हैं?

i)''कैदी और कोकिला'' कविता में निहित वर्णन के अनुसार बताइए कि कवि कहाँ थे और कोकिला कहाँ थी? उससे अपनी बातें कहने की ललक कवि के मन में क्यों उठी होगी?

(iii)'ग्राम श्री' कविता के आधार पर कटहल आदि विविध उत्पादों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(iv)कवि रसखान किस स्थिति में कालिंदी के किनारे के कदंब की डालों पर अपना वास बनाना चाहते हैं तथा उनकी इस तरह की इच्छा किस कारण इतनी प्रबल हो रही है?

(v) कबीरदास ने उंचे कुल मं जन्म लेने वाले को किस प्रकार रहने का निर्देश दिया है? उनके अनुसार वह कैसे कलश के समान है?

(vi) ''ईह! जब दानापूर डूब रहा था तो पटनियाँ बाबू लोग उलटकर देखने भी नहीं गए, अब बूझो ! '' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए तथा बताइए इस टिप्पणी में मानवीय स्वभाव के किस पक्ष पर चोट की गई है?

खण्ड-घ

(लेखन)

प्र०१3.दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर किसी एक विषय पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए-

(i) **बेकारी की समस्या**

- भूमिका
- बेकारी के कारण
- समाधान
- सरकार द्वारा सहयोग
- उपसंहार

(ii)वन - संपदा

(i) प्रस्तावना

(ii) अंधाधुंध कटाई

(iii) संरक्षण की आवश्यकता

(iv) उपाय एवं भावी योजनाएँ

(v) उपसंहार

(iii)अनुशासन

(i) प्रस्तावना

(ii) मानव जीवन और अनुशासन

(iii) स्वयं और राष्ट्र की उन्नति हेतु अनिवार्य

(iv) कुछ उदाहरण

(v) उपसंहार

प्र०१4. आपके घर का बिजली का मीटर जल गया है। उसे बदलवाने के लिए बिजली बोर्ड के अधिकारी को – पत्र लिखिए।

प्र०१5. आपके कस्बे में रामलीला का आयोजन हुआ था। दशहरे के दिन रावण वध और उसके दहन से पूर्व स्थानीय नगर–पालिका के अध्यक्ष महोदय ने – इस पर्व को – अत्याचार और दुराचार की पराजय का संदेश बताया। इस अवसर का एक प्रतिवेदन प्रस्तुत कीजिए।